Dr. Sangita Kumari Sinha
B.A.D-I (S).

Difference between Illusion and Hallucination

गलत प्रत्यक्षण को illusion कहते हैं। भ्रम एक तरह का प्रत्यक्षण ही है। उदाहरण स्वरूप - यदि अँधेरे में रस्सी को आप साँप के रूप में प्रत्यक्षण करते हैं तो यह भ्रम का उदाहरण होगा। प्रत्यक्षण की श्रेणी में अन्तर्भूत भी इसे भ्रम इसलिए कहा जाता है कि क्योंकि इसमें जो प्रत्यक्षण होता है वह पहले हुए प्रत्यक्षण से भिन्न होता है। जैसे रस्सी को जब अँधेरे में हम साँप के रूप में प्रत्यक्षण करते हैं तो यह प्रत्यक्षण पहले के प्रत्यक्षण यानी रस्सी को रस्सी के रूप में ही किया गया प्रत्यक्षण से भिन्न होता है।

परन्तु कभी कभी हमें perception बिना किसी उद्दीपक का ही होता है इस तरह के perception को Hallucination कहा जाता है। उदाहरण स्वरूप, अँधेरे कमरे में यदि आपको ऐसा दिखाई पड़ता है कि कोई व्यक्ति खड़ा है तो hallucination का उदाहरण होगा न कि भ्रम का। हाँ, यदि अँधेरे कमरे में रखा गया छाता को देखकर व्यक्ति उसे कोई दूसरा व्यक्ति समझ बैठता है तो इसे हम illusion कहेंगे। इस तरह से हम देखते हैं कि भ्रम तथा विभ्रम दोनों में ही व्यक्तियों को गलत ज्ञान होता है। इन समानता के बावजूद भी निम्न अन्तर हैं :-

(1) भ्रम में Stimulus होता है परन्तु विभ्रम में उद्दीपक नहीं होता है। जैसे :- अँधेरे में रस्सी को साँप के रूप में देखना एक भ्रम का उदाहरण है परन्तु अँधेरे कमरे में कुछ नहीं होने पर भी यदि कोई किसी व्यक्ति या वस्तु को देखता है तो यह विभ्रम का उदाहरण है।

(2) भ्रम अधिकतर बाह्य कारकों से होता है परन्तु विभ्रम अधिकतम आत्मगत कारकों जैसे :- चिन्ता, भय, मानसिक रोग आदि कारकों से होता है।

(3) चूँकि भ्रम में उद्दीपक मौजूद रहता है अतः इसका स्वरूप करीब-करीब स्पष्ट होता है।

Scanned with CamScanner

परन्तु विभ्रम में उद्दीपक नहीं होता है अतः इसका स्वरूप अस्पष्ट होता है। उदाहरणस्वरूप अंधेरे में रस्सी को देखकर कोई व्यक्ति साँप या उसके आकार की ही कोई वस्तु समझ सकता है, कोई स्त्री या पुरुष को नहीं। परन्तु अंधेरे कमरे में यदि विभ्रम हो रहा है तो उस विभ्रम में कुछ भी देख सकता है स्त्री, पुरुष अलमीरा आदि कुछ भी देख सकता है अतः विभ्रम का स्वरूप कुछ अनिश्चित होता है।

(4) विभ्रम अधिकतर असामान्य व्यक्तियों को होता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि विभ्रम सामान्य व्यक्तियों को नहीं होता है भ्रम सामान्यव्यक्ति तथा असामान्य व्यक्तियों दोनों में ही होता है परन्तु असामान्य व्यक्तियों में ज्यादा होता है।

(5) सामान्य व्यक्तिके भ्रम का स्वरूप स्थायी तथा अस्थायी दोनों ही होता है। परन्तु सामान्य व्यक्तियों में विभ्रम का स्वरूप हमेशा अस्थायी होता है, परन्तु असामान्य व्यक्तियों में विभ्रम का स्वरूप स्थायी होता है अनेकों ऐसे मानसिक रोग हैं जिनमें व्यक्तियों को जो विभ्रम होता है वह स्थायी रूप से उनमें दिन-रात मौजूद रहता है और वह उसी में डूबा रहता है।

Scanned with CamScanner